ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 197-199

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

अजन्ता गुफाओं में कला विषयों की विविधता

1. दिव्यांशी
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री– आई.एन.एम., पी.जी. कॉलेज, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, एन0 ए0 एस0 कालेज, मेरठ समन्वयक– ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0), भारत

Received-20.06.2022, Revised-24.06.2022, Accepted-28.06.2022 E-mail: divanshikashyap240@gmail.com

सारांशः– *पूर्व बौद्धकाल में चित्रकला का विशेष विकास प्रमाणित नहीं है, क्योंकि भगवान बुद्ध ने स्वयं अपने अनुयायियों को चित्रकला की ओर प्रवृत्त नहोने का उपदेश दिया। ईसवी कला के उदय होने के साथ ही भारतीय कला के इतिहास में स्वर्ण युग प्रस्फुटित होता दिखाई पड़ता है। इस समय बौद्ध धर्म अपने प्रभाव को लोगों के मन मस्तिक पर स्थिर कर रहा था, भारत वर्ष का यह स्वर्ण युग था, इस समय भारतीय संस्कृति को एक नवीन चेतना प्राप्त हुई, परन्तु बौद्ध ध र्म का प्रभाव संस्कृति के किसी भी अन्य पक्ष पर उतना गहरा नहीं दिखा, जितना चित्रकला पर दिखाई पड़ता है। बौद्ध धर्म का पूर्वी देशों जैसे श्रीलंका, चीन, जावा, नेपाल, तिब्बत, जापान, आदि देशों की कला पर विशेष रूप से पड़ा इस सब देशों की वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला के अवशेष इस बात का प्रमाण तिब्बती इतिहासकार "लामा तारानाथ ने कहा कि जहाँ– जहाँ बौद्ध धर्म फैला वहां – वहां चित्रकार पाए गए।" यद्यपि बहुत सी कलाकृतियाँ समय के क्रूर प्रहारों से नष्ट हो गई, परन्तु फिर भी बौद्ध भगवान तथा शैव्य कलाकारों की कुछ समुचितकृतियाँ कलाकारों की निपुणता तथा कारीगरी की दक्षता को आज भी जीर्ण– शीर्ण अवस्था में प्राप्त है। इस कला शैली की विकास अथवा जन्म बहुत स्वाभाविक ढंग से हुआ। इन कलाकारों ने बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित कथाओं तथा जातक कथाओं पर आधारित मूर्तियाँ बनायी। इन मूर्तियों में बुद्ध की मुद्रायें भारतीय है। जैसे अभय मुदा ज्ञान मुद्रा, ध्यान मुद्रा या धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा आदि।*

कुंजीभूत शब्द– चित्रकला, अनुयायियों, स्वर्ण युग, प्रस्फुटित, वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, तिब्बती इतिहासकार।

अजन्ता की श्रेष्ठ कृतियाँ गुप्त काल में बनायी गयी बौद्ध धर्म का प्रचार तूलिका की साधना पर ही अधिक हुआ है। इस धर्म की मूल परम्परायें चित्रात्मक है। विशेष रूप से अजनता की बौद्धकला की सर्वोत्तम चित्राकृतियों के भाव तथा रूप की सुन्दरता और विशेषताओं को देखकर दर्शक चकित रह जाते हैं। सुन्दर रूप, और कल्पना की मृदु मुस्कान करूणा और शान्ति के आँचल से आवृत्त अजन्ता की कलाकृतियाँ अपने अवगुन्ठन में न जाने कितनी सरस भावनाओं और कलाकारों की प्राचीन भारतीय कला– इतिहास को स्वर्ण पृष्ठिका लगाये हुये अपने मूक रूपों में चिरशान्ति और आत्मा के अमरत्व का सन्देशदे रही है। अजन्ता महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित है। अजिण्ठा नामक ग्राम के नाम पर इस क्षेत्र का नाम अजन्ता पड़ा।सतपुड़ा की पहाड़ियों को काटती बघोरा नदी के प्रवाह से और घुमावों से घाटी का रूप अर्ध चन्द्राकार के समान बन गया है। ये गुफायें पूर्व से पश्चिम की ओर काटकर बनायी गयी है। यह गुफाऐं संख्या में 30 हैं। इन गुफाओं में नवीं, दसवीं, उन्नीसवीं, छब्बीसवीं तथा तीसवीं गुफाएँ पूजा के स्थान अर्थात् चौत्य गुफायें है। बाकी सब विहार गुफायें है, अर्थात् बौद्ध भिक्षुओं के रहने के स्थान है।

विषय की दृष्टि से हम अजन्ता की चित्रावली को तीन भागों में विभक्त कर सकते है– कथाचित्र, स्वतन्त्र चित्र– रूपभैदिक, वर्णात्मक चित्र वाचस्पति गैरोला ने भी अजन्ता की चित्रावली को तीन प्रमुख भागों में ही विभक्त किया है : आलंकारिक रूप भैदिक, वर्णात्मक चित्र ।

कथा चित्र– इन कथाचित्रों के माध्यम से कलाकार ने अभिष्ट से अभिष्ट भाव तथा लम्बी से लम्बी कथा का बड़े सरलीकृत रूप में स्पष्ट कर दिया है। सभी जातक कथाओं का कथाचित्र में लिया जा सकता है। इन कथाचित्रों में कुछ कथाओं की कलाकार ने पुनरावृत्ति भी की है। वह अपने भगवान में इतना लीन था कि एक ही जातक कथा को दो बार भी चित्रित कर गया है। उदाहरण तथा "श्रावस्वी का चमत्कार" विषय को कलाकर ने गुहा संख्या 1 व 6 में चित्रित किया है और इसी विषय का गुहा संख्या 26 में कठोर पाषाण में उत्कीर्ण किया है। इसी प्रकार छदन्त जातक की कथा का भी दो बार चित्रित किया है। कथा चित्रों की एक बड़ी विशेषता चित्रों को दृश्यात्मकता है। दृश्य चित्र के सादृश्य एक के बाद एक घटना क्रम चलता ही रहता है और सारी कथा सहज ही दर्शक के मन पर छा जाती है। गुहा संख्या 17 में मातृ पोषक जातक के चित्र में घटना को बड़ें ही सहज रूप से रूपायित किया गया है। इस प्रकार की वर्णात्मकता अजन्ता के कथा चित्रों की प्रमुख विशेषता कही जा सकती है (वर्णात्मक चित्रों) में मृग जातक में कई सौ आकृतियों का अंकन किया गया है।

वतन्त्र चित्र– अजन्ता के भित्ति चित्रों में स्वतन्त्र चित्रों का अपना अलग ही आस्तित्व हैं। वाचस्पति गैरोला ने इन्हें ही रूप भैदिक चित्र कहा है, ऐसा नहीं है कि कलाकार केवल जातक कथाओं तक ही सीमित रह गया हो, उसने इन स्वतन्त्र चित्रों से बड़े ही सुन्दर विषयों का समायोजन किया है। कला की दृष्टि से ये चित्र उच्च कोटि के है। एशिया महाद्वीप की

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

बौद्धकला पर पदमपाणी अवलोकितेश्वर के चित्र का व्यापक प्रभाव रहा है। इसमें शान्ति सौम्यता दया, करूणा और मानव प्रेम की महान कल्पना की गयी है। चित्र के समक्ष पहुँच कर दर्शक हत्प्रभ रह जाता है। सभी और से अपनी ओर देखती इस आकृति में दर्शक बंधजाता है। स्वतंत्र चित्रों में दूसरी भित्ति पर बोधिसत्व अवलोकितश्वर (वजपाणी) की विशाल आकृति है। त्रिभंगी मुद्रा में हाथ का आकार बहुत ही सुन्दर है। मुकुट व मोतियों के हार पर कलाकार ने विशेष रूप से कार्य किया है। पहली गुफा के इन दोनों स्वतंत्र चित्रों ने अजन्ता की ख्याति को द्विगुणित करने में विशेष योगदान दिया है। इनके बिना अजन्ता को जैसे पूर्ण ही नहीं कहा जा सकता। बोधिसत्व अवलोकितेश्वर वज्रपाणि में जगत प्रसिद्ध ''काली राजकुमारी'' का चित्र है, जो इसी नाम से जगत विख्यात है। यह भी बोधिसत्व के चित्र का एक सजीव अंश है। स्वतंत्र चित्रों में इसकी गणना की जा सकती है इसी गुफा में दो दीवारों के मध्य बचे हुए स्थान पर राजा एवं रानी का एक चित्र है, जिसे स्वतंत्र चित्र के रूप में लिया जा सकता है।

आलंकारिक चित्र– अंलकारिता अजन्ता कलाकार की अपनी निजी निधि है। गुफा के हर कोने में जहाँ तक दृष्टि जाती हैद्य कलाकार की अंलकारिता का परिचय प्राप्त करके ही लौटती है।

अजन्ता की इस अलंकारिता को दो भागों में बाँटा जा सकता है : (1) अलंकरिक चित्र (2) आलंकारिक आलेखन।

अलंकारिक चित्र उनको कहा गया है, जो केवल अलंकरण हेतु बनाये गये हैं। उनका मुख्य विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है, अर्थात् उनके पीछे कोई कथावस्तु प्रतीत नहीं होती उनके अंकन में कहीं– कहीं तो इतनी बारीकी तथा पूर्णता लगती है। ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं– कहीं शिष्य कलाकारों द्वारा ये चित्रण कराया होगा, परन्तु यह भी उत्कृष्ट कोटि का है। कलाकार ने प्रकृति की असीम सम्पदा से चुन– चुनकर किन्ही– किन्ही उपकरणों को समायोजित कर दिया है। अपने चित्रों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए देव, किन्नर, यक्ष, पशु, पक्षी, फल, फूल, वृक्ष व लतायें सभी का बड़ी ही पहुंता से आलंकारिक परिवेश में चित्रित किया है।

ग्रिफित्स महोदय का तो यहाँ तक कहना है कि सुपर्ण (इसका वक्ष तक का भाग मानवाकार तथा शेष शरीर पक्षी का– सा है) गरुड़, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा जैसे काल्पनिक तथा पौराणिक प्राणियों की रुचिकर आकृतियों का प्रयोग खाली स्थानों को भरने के लिए हुआ है। आलंकरिक चित्रों में पहली गुफा का प्रसिद्ध चित्र ''बैलों का युद्ध'' बहुत ही प्रसिद्ध है।

गुहा संख्या– 2– में अलंकरण बहुत अधिक है, छत पर, स्तम्भ पर, गर्भ गृह को छत पर स्तम्भों के ऊपर मेहराब आदि स्थानों पर आलंकारिक चित्र बने हैं। सौन्दर्य की कल्पना अजन्ता कलाकार की सर्वत्र अपनी ही विशेषता है और उस सौन्दर्य कल्पना की अभिव्यक्ति रुप द्वारा ही हो सकती है। रूपों की विविधता अजन्ता के भित्ति चित्रों का वैभव मानी जाती हैं, हर पल कलाकार ने भिन्न आकार प्रकार प्रस्तुत किए हैं। किसी भी रूप का अपना एक निश्चित आकार प्रकार होता है, रंग होता है तथा स्वभाव होता है और इन्हीं के आधार पर रूप का रूप से भेद किया जा सकता है। रूप का अर्थ है जो आँखों को दिखाई पड़े। रूप और रंग चित्रकला में एक– दूसरे के पूरक हैं। क्या पुरुष, क्या नारी, क्या पशु क्या पक्षी, क्या फल, क्या नदी, क्या पर्वत, क्या वन सभी में इनके विभिन्न रूपों एवं प्रकारों का अंकन है।

इन विभिन्न रूपों की विविधता उनके आकार व उनके विविध उपकरणों से की जा सकती है। अजन्ता कलाकार ने पुरुष रूपों का खुलकर प्रयोग किया है। उसने बड़े निकट से उसके प्रत्येक हाव– भाव के अंग– उपांगों का उसके स्वभाव का यर्थाथ रूप में अध्ययन किया और तत्पश्चात् उसको प्राकृतिक उपकरणों की सहायता से आलंकारिक रूप दे डाला। अजन्ता में पुरुषाकृतियों के मानदण्ड शिल्प– शास्त्रों में वर्णित मानदण्डों के अनुरूप ही प्रतीत होते हैं। शिल्प शास्त्र में अंग प्रत्यंगो के चित्रण के लिए ऐसे उपमानों का उल्लेख है, जो अधिकांशता प्राकृतिक है।अजन्ता में मुखाकृतियों को साधारण तथा अंडाकार अथवा पीपल के पत्ते के आकार का बनाया है। भगवान बुद्ध की आकृति तो अधिकांशतः अंडाकार ही बनाई गई है, कंठ से लेकर जठर तक का देहांश गोमुखाकार बनाया गया है। वक्ष स्थल की दृढ़ता सौम्यता गाय के सिर के शीर्ष भाग से प्रकट होती है और कटि की कृशंता गाय के मुँह के नीचे के भाग से अभिव्यक्त हो जाती है। यह सभी विशेषताएँ पदमपाणि के चित्र में प्रदर्शित हैं। अजन्ता के कलाकार ने अंगुलियों के अंकन में तो कमाल ही कर दिया है, अंगुलियों को शिम्बीफल के आकार का बनाया गया है। अजन्ता में पुरुष रूपों को उनके लक्षणों एवं प्रमाण के आधार पर ही देव, नाग, यक्ष, किन्नर, वामन एवं साधारण रूप में श्रेणीबद्ध किया है।

अजन्ता के भित्ति चित्रों में नारी के सारल्य, कारुण्य, औदार्य, त्याग, विनय, उल्लास, सौहार्द, आत्म– समर्पण, शांति जैसी सरस मनोभावनाओं की कलापूर्ण अभिव्यक्ति में कलाकारों ने अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। अजन्ता कलाकार ने नारी को फूलों की तरह चित्रित किया है, जो हार बनकर सामूहिक रूप से राजाओं और राजकुमारों के गले की शोभा बढ़ाती है और उनके महलों पर छाई रहती है। नारी चित्रण में कहीं पर नारी को अप्सरा बनकर अथवा परी बनकर आकाश में उड़ते

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

दिखाया है तथा कहीं पर खम्भों की ओट में प्रणय प्रतीक्षा करते दर्शाया है। कहीं पर प्रेमी के साथ प्रणय में खोयी है, तो कहीं भगवान बुद्ध के प्रवचन सुनने में मग्न है, कहीं पर अपने भगवान को पुष्प अर्पित करने जा रही है, तो कहीं पर दासी रूप में चंवर लिये खड़ी बनायी है। प्रकृति रूप में पशु– पक्षी, जल– जन्तु, वृक्ष लताएं सभी ने मिलकर चित्रण को ठोसता दी है, इस अंकन से भित्ति चित्रों के संयोजन में लावण्यता का समावेश हो गया है।

अजन्ता के कलाकार ने हाथी, हिरण, अश्व, बैल का चित्रण प्रमुख रूप में किया है, किन्तु इसके अतिरिक्त बारहसिंघा, भालू, वृषभ, रीछ, कुत्ता, शेर, बन्दर, लोमड़ी, चीता, गाय, शेरनी आदि का चित्रण भी हुआ है। अजन्ता कलाकार का आलेखन एवं मांगलिक अभिप्रेरकों के रूपायन पर निजी स्वामित्व रहा है। अजन्ता के कलाकार की इन प्रतीकों व चिन्हों को रूपायित करने में कलाकार की नंगल कामनायें निहित हैं, साथ ही हस्ती एवं हंसरूप में तो भगवान स्वयं ही जन्म ले चुके हैं, इन प्रतीकों में निम्न है : कमल, स्वास्तिक, शंख, हस्ति, हंस।

वैदिकसंस्कृति में शंख मांगल्य का प्रतीक रहा है। बौद्ध धर्म में ऐसी ही मान्यता रही होगी ऐसा अनुमान है। कमल एवं शंख कुबेर के साथ सहबद्धता रखते होंगे।

निष्कर्ष– अजन्ता के कला मण्डप विश्व के उत्कृष्ट कला मण्डपों में से एक है। गुप्तकालीन कला की ओजस्विता एवं भावभिव्यंजना तथा गतिमत्ता उस काल के अप्रतिम वैभव एवं उन्नत ऐश्वर्य का ही प्रतीक है।बौद्ध स्थाविदों एवं कलाविदों, आचार्यों ने भी अजन्ता के निर्माण में पूरा– पूरा योगदान दिया। जिन्होंने यश– अपयश हॉनि– लाभ, रोगद्वेष पर सर्वथा विजय पा ली थी। बौद्ध धर्म को अन्ततः समर्पित यह गुफायें विश्व– वास्तु की दृष्टि से बड़ी विलक्षण है, अजन्ता के कलाकार ने धर्म के गूढ़ रहस्य को समझने की चेष्टा की तथा अपनी कला साधना एवं सृजन में धर्म को यशक्त प्रेरणा स्रोत बनाया।

इस प्रकार अजन्ता के चित्रों के रूपों की विविधता एवं उसका भावपूर्ण रूपायन ही चित्रकला की आत्मा है। इस स्वर्ण युगीन कला का प्रभाव भारतीय चित्रकला के सम्पूर्ण इतिहास पर रहा है तथा रहेगा। अजन्ता के पश्चात् सभी कला शैलियां अजन्ता से ही प्रभावित रही है। बाघ, बादामी, सित्तनवालस तथा सिगीरिया पर तो प्रत्यक्ष रूप से ही इन रूप आकारों का प्रभाव रहा है। यहाँ के विषय यद्यपि भिन्न हो गये, किन्तु देह रूपों का आकार वही रहा। मध्यकालीन पाल शैली पूर्ण रूप से अजन्ता के रूप आकारों से प्रभावित रही इसके बाद की राजपूत एवं पहाड़ी कलम पर भी अप्रत्यक्ष रूप से इसी का प्रभाव रहा, आज भी कलाकार के लिए ये तीर्थस्थल है। यहाँ के रूपों की विविधता ही तो प्रत्येक कलाशैलियों की प्रेरणा का मूल स्रोत रही है तथा रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा, बहादुर, डॉ० अविनाश– भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली (उ0प्र0)।
2. शर्मा, डॉ० रेनू – अजन्ता के भित्ति चित्रों की कलात्मक, राजस्थान ग्रंथागार , जोधपुर (राजस्थान)।
3. भार्गव, डॉ० सरोज रिसर्च इंडिया प्रेस, संगम विहार, नई दिल्ली।

*****